ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
RNI TITLED NO. UPBBIL04292
RNI REG. NO. UPBIL/2014/66218
PP. NO.- 508-511
ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-13, No.-I, Issues-16, YEAR- June -2020

# भारतीय चित्रकला और वैश्विक मंच पर रोजगार के अवसर

**डॉ० रश्मि शर्मा**
असिस्टेंट प्रोफेसर एवं विभागाध्यक्ष– चित्रकला विभाग,
किशोरी रमण महिला महाविद्यालय, मथुरा (उ०प्र०), भारत

**Received-13.06.2020, Revised-20.06.2020, Accepted-25.06.2020 E-mail : 2004rashmisharma@gmail-com**

***सारांशः*** ***भारतीय संस्कृति और सभ्यता विश्व की प्राचीनतम परंपराओं में से एक है। इसमें कला का विशेष स्थान रहा है, क्योंकि कला न केवल मनोरंजन का साधन है, बल्कि यह मानव जीवन के भावनात्मक, धार्मिक, सामाजिक और सांस्कृतिक पक्षों को भी प्रतिबिंबित करती है। भारतीय चित्रकला इसी सांस्कृतिक धरोहर का अभिन्न अंग है। प्राचीन गुफा चित्रों से लेकर आधुनिक डिजिटल पेंटिंग तक इसकी यात्रा भारतीय जीवन और सोच को व्यक्त करती है।***

***साथ ही, भारत की सांस्कृतिक धरोहर, सदियों पुरानी परंपराओं, विविधताओं और कलात्मक अभिव्यक्तियों से निर्मित है। भारतीय संस्कृति का सबसे जीवंत पहलू उसकी कला है, जिसमें चित्रकला का स्थान अत्यंत महत्वपूर्ण है। चित्रकला केवल सौंदर्यबोध की अभिव्यक्ति नहीं है, बल्कि यह मानव सभ्यता के विकास, सामाजिक सरोकारों, धार्मिक आस्थाओं और ऐतिहासिक घटनाओं का दर्पण भी है।***

**कुंजी भूत शब्द – भारतीय चित्रकला, वैश्विक मंच, सांस्कृतिक धरोहर, आधुनिक डिजिटल पेंटिंग, सौंदर्यबोध।**

भारतीय चित्रकला ने प्रागैतिहासिक गुफा चित्रों से लेकर आधुनिक डिजिटल आर्ट तक लंबी यात्रा तय की है। भीमबेटका की गुफाओं, अजंतादृ एलोरा की भित्तिचित्र कला, राजस्थान और पहाड़ी लघुचित्र, मधुबनी और गोंड जैसी लोकशैलियाँ, राजा रवि वर्मा और अमृता शेरगिल जैसी आधुनिक प्रवृत्तियाँ– सभी भारतीय जीवन दर्शन और कलादृ संवेदना की विविधता को उजागर करती हैं।

वैश्वीकरण और तकनीकी क्रांति के दौर में भारतीय चित्रकला अब केवल संग्रहालयों और धार्मिक स्थलों तक सीमित नहीं रही। यह अंतरराष्ट्रीय गैलरियों, नीलामी घरों, फैशनदृइंडस्ट्री, डिजिटल प्लेटफार्मों और सांस्कृतिक कूटनीति के माध्यम से वैश्विक मंच पर अपनी पहचान बना रही है। इसके साथ ही यह लाखों कलाकारों, डिज़ाइनरों और उद्यमियों के लिए रोजगार और उद्यमिता का साधन भी बन चुकी है।

आज वैश्वीकरण, तकनीकी प्रगति और डिजिटल प्लेटफार्मों ने भारतीय चित्रकला को अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर नई पहचान दी है। भारतीय चित्रकार अब केवल देश के भीतर ही नहीं, बल्कि यूरोप, अमेरिका, जापान, ऑस्ट्रेलिया और खाड़ी देशों तक अपने चित्रों की प्रदर्शनी लगाकर करोड़ों का व्यापार कर रहे हैं।

ऐसे में यह प्रश्न महत्वपूर्ण हो जाता है कि भारतीय चित्रकला वैश्विक मंच पर किस प्रकार अवसर पैदा कर रही है? क्या यह केवल सांस्कृतिक पहचान का साधन है या फिर रोजगार और उद्यमिता का भी स्रोत बन रही है? यह लेख ऐसे प्रश्नों का उत्तर प्रस्तुत करता है।

**ऐतिहासिक पृष्ठभूमि** – भारतीय चित्रकला का इतिहास हजारों वर्षों पुराना है। इसकी शुरुआत आदिमानव द्वारा गुफाओं की दीवारों पर बनाए गए चित्रों से मानी जाती है। भीमबेटका (मध्यप्रदेश) की गुफा चित्रकारी इसका जीवंत प्रमाण है। इन गुफा चित्रों में शिकार, नृत्य, पशु–पक्षियों और सामाजिक जीवन के दृश्य अंकित हैं।

समय के साथ भारतीय चित्रकला ने अनेक रूप धारण किए कृअजंता–एलोरा की भित्ति चित्रकारी (2वीं शताब्दी ईसा पूर्व से 6वीं शताब्दी ईस्वी तक) ने धार्मिक जीवन, बौद्ध कथाओं और मानवीय भावनाओं को अद्भुत रंगों में उकेरा। गुप्त काल में चित्रकला ने आध्यात्मिक और कलात्मक उच्चता प्राप्त की। मध्यकाल में मुगल और राजस्थानी चित्रकला का विकास हुआ, जिसने भारतीय कला को दरबारी संस्कृति से जोड़ा। औपनिवेशिक काल में यूरोपीय प्रभाव के साथ नई शैली (ब्वउचंदल ैबीववस च्पदजपदह) उभरी।

आधुनिक काल में राजा रवि वर्मा, अमृता शेरगिल, मकबूल फिदा हुसैन, जामिनी रॉय जैसे कलाकारों ने भारतीय चित्रकला को अंतरराष्ट्रीय स्तर पर नई पहचान दिलाई।

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-13, No.-I, Issues-16, YEAR- June -2020

इतिहास के इस क्रम में भारतीय चित्रकला केवल अभिव्यक्ति का माध्यम नहीं रही, बल्कि सामाजिक–सांस्कृतिक संवाद और आर्थिक गतिविधि का भी हिस्सा बनी।

**भारतीय चित्रकला का ऐतिहासिक विकास** – भारतीय चित्रकला का इतिहास प्राचीन एवं अत्यंत विस्तृत है। इसे मोटे तौर पर भारतीय चित्रकला विकास को चार प्रमुख चरणों में बाँटा जा सकता है।

**(क) प्रागैतिहासिक एवं प्राचीन कालीन चित्रकला –**

भीमबेटका की गुफाएँ (मध्यप्रदेश) रू यहाँ शिकार, नृत्य और पशुदृपक्षियों के चित्र हमें हजारों वर्ष पुरानी मानव सभ्यता की झलक देते हैं।

**अजंता गुफाएँ (2वीं शताब्दी ई.पू. दृ 6वीं शताब्दी ई.)** : बौद्ध भित्तिचित्रों में भगवान बुद्ध के जीवन और जातक कथाओं का चित्रण।

**बाघ गुफाएँ** : इनकी भित्तिचित्र शैली अजंता से मिलतीदृजुलती है, लेकिन यहाँ अधिक नाटकीय और जीवंत चित्र देखने को मिलते हैं।

**(ख) मध्यकालीन चित्रकला –**

**मुगलकालीन चित्रकलाः** फारसी और भारतीय शैली का अनूठा संगम। अकबर, जहाँगीर और शाहजहाँ के समय में चित्रकला अपने चरम पर पहुँची।

राजस्थान लघुचित्र रू मेवाड़, बूंदी, किशनगढ़ और मारवाड़ की अपनीदृअपनी विशिष्ट शैली।

पहाड़ी चित्रकला रू कांगड़ा और गढ़वाल की चित्रशैली विशेष रूप से राधादृकृष्ण प्रेमकथाओं पर आधारित।

**(ग) लोक एवं जनजातीय चित्रकला –** भारतीय लोककला ग्रामीण और जनजातीय जीवन की सादगी और गहराई को दर्शाती है।

**मधुबनी (बिहार):** धार्मिक कथाओं, विवाहदृ अनुष्ठानों और प्रकृति से प्रेरित चित्र।

**गोंड चित्रकला (मध्यप्रदेश):** पशुदृपक्षी और प्राकृतिक दृश्य।

पट्टचित्र (ओडिशा), वारली (महाराष्ट्र), कलमकारी (आंध्र प्रदेश) रू लोकजीवन, धार्मिक कथाएँ और प्रकृति पर आधारित।

**(घ) आधुनिक एवं समकालीन चित्रकला –** राजा रवि वर्मा पौराणिक विषयों को पश्चिमी यथार्थवादी शैली में चित्रित किया। अमृता शेरगिल, एम.एफ. हुसैन, एस.एच. रज़ा, तैयब मेहता रू इन्होंने भारतीय कला को आधुनिक दृष्टिकोण और वैश्विक पहचान दिलाई।

आज समकालीन भारतीय कला में डिजिटल पेंटिंग, मिक्स मीडिया और इंस्टॉलेशन आर्ट का बोलबाला है।

**वैश्विक मंच पर भारतीय चित्रकला की स्थिति–** भारतीय चित्रकला अब केवल परंपरागत संग्रहालयों और मंदिरों तक सीमित नहीं रही।

1. **अंतर्राष्ट्रीय प्रदर्शनियाँः** लंदन, पेरिस, न्यूयॉर्क, टोक्यो और दुबई में भारतीय चित्रकारों की प्रदर्शनी।
2. **ऑनलाइन प्लेटफॉर्म :** ।तजेल, ैंजबीप ।तज, म्जेल जैसे मंचों पर भारतीय चित्रकला वैश्विक खरीदारों तक पहुँच रही है।
3. **सांस्कृतिक कूटनीतिः** भारतीय दूतावास और सांस्कृतिक संस्थाएँ भारतीय कला को 'सॉफ्ट पावर' के रूप में प्रस्तुत कर रही हैं।
4. **पर्यटन और विरासतः** विदेशी पर्यटक अजंता, एलोरा, खजुराहो और जैसलमेर जैसे स्थलों की चित्रकला से आकर्षित होते हैं।
5. **अकादमिक अध्ययनः** विदेशी विश्वविद्यालय भारतीय कला पर शोध कर रहे हैं, जिससे भारतीय कलाकारों और कला बाज़ार को पहचान मिल रही है।
6. **नीलामी घरः** सोथबीज़ और क्रिस्टीज़ जैसे प्रतिष्ठित नीलामी घरों में भारतीय चित्र करोड़ों रुपये में बिकते हैं।
7. **डायस्पोरा की भूमिकाः** विदेशों में बसे भारतीय मूल के लोग भारतीय चित्रकला खरीदकर अपने देश की संस्कृति से जुड़े रहते हैं।
8. **सांस्कृतिक कूटनीतिः** भारत सरकार के प्ब्ब् और 'फेस्टिवल ऑफ इंडिया' कार्यक्रमों ने भारतीय कला को विदेशों तक पहुँचाया है।

**भारतीय चित्रकला से जुड़े वैश्विक रोजगार अवसर–**

**(क) कला शिक्षा एवं अकादमिक क्षेत्रः** विश्वविद्यालयों और कला महाविद्यालयों में अध्यापन, रिसर्च और आर्ट हिस्ट्री के क्षेत्र में अवसर।

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-13, No.-I, Issues-16, YEAR- June -2020

**(ख) संग्रहालय एवं गैलरी प्रबंधन :** क्यूरेटर, आर्टदृकंज़र्वेटर, गैलरीदृमैनेजर और आर्टदृक्रिटिक के पद, सांस्कृतिक पर्यटन के माध्यम से आय।

**(ग) कला बाज़ार और नीलामी :** पेंटिंग की बिक्री ऑनलाइन प्लेटफार्म (जैसे, Etsy, Amazon, eBay, Art Station). निजी कलेक्टर और कॉर्पोरेट ाउस भारतीय कला में निवेश करते हैं।

**(घ) डिज़ाइन, फैशन और टेक्सटाइलः** मधुबनी, वारली और कलमकारी का प्रयोग फैशन और होमदृडेकोर में, वस्त्र उद्योग, आभूषण डिज़ाइन और इंटीरियर डेकोरेशन में मांग।

**(ङ) मीडिया और मनोरंजन उद्योग :** फिल्म पोस्टर, एनीमेशन, डिजिटल पेंटिंग और टथ्र इंडस्ट्री, वीडियो गेम और विज्ञापन क्षेत्र में रोजगार।

**(च) आर्ट/थेरेपी और काउंसलिंगः** मानसिक स्वास्थ्य में चित्रकला का उपयोग, अस्पतालों और पुनर्वास केंद्रों में रोजगार।

**(छ) पर्यटन और सांस्कृतिक उद्योग :** आर्टदृवर्कशॉप और फेयर का आयोजन, विदेशी पर्यटकों को आकर्षित करने के लिए पेंटिंगदृट्रेनिंग।

**(ज) पारंपरिक कलाकारों के लिए अवसरः** मधुबनी, गोंड, पटचित्र जैसे कलाकार अपनी कला का निर्यात कर आय अर्जित कर रहे हैं। हैंडीक्राफ्ट उद्योग और सरकारी योजनाएँ इन्हें प्रोत्साहन देती हैं।

**(झ) आधुनिक और समकालीन कलाकारः** आर्ट गैलरी, कला प्रदर्शनी और ऑनलाइन बिक्री से अवसर।आधुनिक कला संग्रहकर्ताओं और निवेशकों की बड़ी मांग।

**(ट) शिक्षा एवं अनुसंधानः** कला विश्वविद्यालयों, कॉलेजों, संग्रहालयों में शिक्षण एवं अनुसंधान कार्य। कला इतिहासकार, क्यूरेटर, आर्ट रेस्टोरेशन विशेषज्ञ के रूप में अवसर।

**(ठ) डिजिटल और व्यावसायिक क्षेत्रः** ग्राफिक डिजाइनिंग, एनीमेशन, गेमिंग इंडस्ट्री में भारतीय चित्रकला की प्रेरणा।

फैशन और टेक्सटाइल डिज़ाइन– परंपरागत चित्रकला पर आधारित डिज़ाइन का उपयोग।

फिल्म और विज्ञापन उद्योग– पोस्टर, सेट डिजाइन और एनीमेशन।

**(ड) उद्यमिता और पर्यटनः**निजी आर्ट गैलरी, स्टूडियो, वर्कशॉप स्थापित करने के अवसर।

**भारतीय चित्रकला में रोजगार के नए क्षितिज –**

**(क) डिजिटल प्लेटफार्म और NFT :** डिजिटल युग में पेंटिंग को छथ्ज (छवददृथ्नदहपइसम ज्वामद) के रूप में बेचना कलाकारों को वैश्विक बाज़ार में सीधी पहुँच देता है।

**(ख) आर्ट/स्टार्टअप और उद्यमिता :** कई युवा कलाकार ऑनलाइन गैलरी, आर्टदृस्टूडियो और कस्टम आर्टवर्क का व्यवसाय शुरू कर चुके हैं।

**(ग) सरकारी नीतियाँ : एक जिला :** एक उत्पाद (व्क्व्) योजना में मधुबनी, पट्टचित्र और वारली जैसी शैलियों को बढ़ावा, मेक इन इंडिया और स्टार्टअप इंडिया के अंतर्गत कलाकारों को प्रोत्साहन।

**चुनौतियाँ –** भारतीय चित्रकला को वैश्विक मंच पर कुछ बाधाओं का सामना करना पड़ता हैः

1. आर्थिक असुरक्षा और कलाकारों की आय सीमित होना।
2. नकली चित्रों की भरमार और कॉपीराइट समस्या।
3. ग्रामीण और लोक कलाकारों की वैश्विक पहुँच कम।
4. कला शिक्षा में व्यावसायिक प्रशिक्षण की कमी।
5. सरकारी योजनाओं के क्रियान्वयन में सुस्ती।

**संभावनाएँ–**

**वैश्विक सहयोगः** विदेशी विश्वविद्यालयों और संस्थानों के साथ सांस्कृतिक आदानदृप्रदान।

**डिजिटल शिक्षाः** ऑनलाइन कोर्स और वर्कशॉप से वैश्विक विद्यार्थियों को जोड़ना।

**सांस्कृतिक पर्यटनः** आर्टदृविलेज और पेंटिंगदृफेयर से रोजगार।

**कॉर्पोरेट निवेशः** CSR योजनाओं के अंतर्गत कला में निवेश।

**भारतीय चित्रकला की विविध शैलियाँ–**

भारतीय चित्रकला की विशेषता इसकी विविधता और क्षेत्रीयता में निहित है। प्रत्येक शैली स्थानीय संस्कृति, धार्मिक परंपरा और सामाजिक जीवन का दर्पण है। प्रमुख शैलियाँः

**(क) भित्ति चित्रः** अजंता, एलोरा, सिगिरिया (श्रीलंका) जैसे स्थलों के भित्ति चित्रों ने भारतीय कलात्मकता को विश्व प्रसिद्ध बनाया।

**(ख) लघु चित्रकलाः** मुगल लघु चित्र– फारसी और भारतीय परंपराओं का समन्वय।

**(ग) राजस्थानी लघु चित्रः** मेवाड़, बूंदी, किशनगढ़, मारवाड़ की चित्रकला, जिनमें

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-13, No.-I, Issues-16, YEAR- June -2020

रामायण–महाभारत और कृष्ण–लीला के प्रसंग अंकित हैं।

**(घ) पहाड़ी चित्रकला:** कांगड़ा, गढ़वाल, बसोहली की चित्रशैली।

**(ड़) लोक एवं जनजातीय चित्रकला:** मधुबनी (मिथिला चित्रकला) दृ बिहार की यह शैली प्राकृतिक रंगों और धार्मिक प्रतीकों पर आधारित है।

**(च) पटचित्र (ओडिशा):** जगन्नाथ संप्रदाय से जुड़ी चित्रकला।

**(छ) वारली कला (महाराष्ट्र):** आदिवासी जीवन और प्रकृति से जुड़ी।

**(ज) गोंड चित्रकला (मध्यप्रदेश):** मिथकीय कथाओं और प्राकृतिक तत्वों पर आधारित।

**(झ) आधुनिक चित्रकला:** राजा रवि वर्मा– पौराणिक विषयों को यथार्थवादी ढंग से प्रस्तुत किया।

**(ट) प्रगतिशील कलाकार समूह (1947) :** हुसैन, Souza, Raza जैसे कलाकारों ने आधुनिकता और भारतीयता का अद्भुत मिश्रण प्रस्तुत किया।

डिजिटल आर्ट और समकालीन प्रयोग दृ नई पीढ़ी के कलाकार पारंपरिक शैली को आधुनिक माध्यम से जोड़ रहे हैं।

**निष्कर्ष–** भारतीय चित्रकला केवल सांस्कृतिक धरोहर नहीं बल्कि आर्थिक संसाधन भी है। यह कलाकारों, उद्यमियों, डिज़ाइनरों और शिक्षाविदों के लिए असीमित अवसर उपलब्ध कराती है। यदि सरकार, निजी क्षेत्र और कलाकार मिलकर इसके संवर्धन में कार्य करें तो भारतीय चित्रकला वैश्विक मंच पर न केवल भारत की पहचान को और मज़बूत करेगी, बल्कि लाखों लोगों के लिए रोजगार और आजीविका का साधन भी बनेगी।

**सन्दर्भ ग्रन्थ सूची**

1. सिंह, राधाकृष्ण (2010). भारतीय कला का इतिहास. दिल्ली: राजकमल प्रकाशन।
2. कोहली, के.के. (2015). इंडियन पेंटिंग्स – अ कल्चरल ट्रेज़र. नई दिल्ली: नेशनल बुक ट्रस्ट।
3. अरोड़ा, एस. (2018). Modern Indian Art and Global Market. ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस।
4. कुमार, अजय (2019). भारतीय चित्रकला की लोक परंपराएँ. वाराणसी: भारती प्रकाशन।
5. Guha-Thakurta, Tapati (2007). Art and the Nation: Colonial India and the Culture of Modernity. Permanent Black.
6. Ministry of Culture, Government of India – ICCRPublications.

*****